

99. LA. (II) 91, 9. PRAB. 31, 8. DṚṢṬĀNTAḢ. 97 bei HABB. 226. प्राणाङ्क-  
 वृचिदपि धारयितुं प्रभूता *vermögend* SĀH. D. 79, 9. mit dat. eines nom. act.  
*vermögen zu bewirken*: संतापाय P. 5, 1, 101. तपाय जगतः BHĀG. 16, 9.  
 तमसां वधाय ḢĀK. 163, v. 1. प्रीत्यै चेतसः Spr. 886. मरुते ऽपकाराय नरस्य  
 4701. सामर्थ्यप्रयनाय RĀĠĀ-TAR. 3, 284. फलसिद्धये KULL. zu M. 2, 97.  
 दुःखाय *Leid zu bewirken* R. 2, 23, 25 (20, 28 GORR.) mit loc. dass.: नि-  
 वर्तने गवाम् Spr. 2130. एषां दण्डे *sie zu züchtigen* BHĀG. P. 6, 3, 27. वि-  
 मुक्तौ *der Erlösung theilhaftig werden können* Spr. 3935. वचनचक्षुता-  
 याम् *Meister sein im Betrügen* 4131. — 5) *zu Gute kommen, helfen,*  
*nützen*: प्र वामत्रं विद्यते दंसनां भुवत् RV. 1, 119, 7. प्र स्तोमो बभूवग्रये  
 127, 10. महे षु णः सुविताय प्र भूतम् 3, 54, 3. 6, 68, 4. यज्ञो हेभ्यो विहृ-  
 तो न प्रबभूव *half nichts, genügte nicht* AIT. Br. 1, 18. TBR. 2, 2, 5. दे-  
 वेभ्यो वै मुच्ये लोको न प्रभवत् TS. 6, 6, 11, 2. प्र मायाभिर्मायिना भूतमत्रं  
 RV. 6, 63, 5. — 6) *Jmd (acc.) mit einer Bitte angehen*: कीर्त्या पुङ्गिति  
 त्वाद्य प्रभवाम्यत्तरेण HARIV. 7383 (die neuere Ausg. hat eine andere  
 Lesart). — 7) *प्रभूत = महाभूत* SĀMĀKĀK. 39. — Vgl. *प्रभव* fgg., *प्रभवि-*  
*तर* fgg., *प्रभव्य*, *प्रभाव*, *प्रभु*, *प्रभूति*, *प्रभूचन्*, *प्रभूञ्ज*. — *caus.* 1) *mehren,*  
*verbreiten*, z. B. den Soma durch Vertheilung in mehrere Gefasse,  
 ÇAT. Br. 4, 2, 5. 4, 2, 18. KĀTJ. ÇR. 10, 6, 14. 21. 25, 12, 34. *reicher aus-*  
*statten*: वाचेमे क्षेत्रे प्रभावयाम AIT. Br. 6, 15. *gedeihen machen*: गोमि-  
 नः) प्रभावयति राष्ट्रं च व्यवहारं कृषिं तथा MBH. 12, 3299. *pflügen*, einen  
 Baum Spr. 2350, v. 1. *प्रभावित zu Macht gelangt, mächtig* KĀM. NITIS.  
 15, 59. KATHĀS. 13, 165. — 2) *sich helfen*: ज्ञर्या पुरुषो जीर्णः किं हि  
 क्त्वा प्रभावयेत् Spr. 4011. — 3) *erkennen*: कथं च खत्वात्मवत्त्वं च तद्व-  
 तः प्रभावयेन्मां च रणे दशाननः R. 5, 37, 35. एवं मनःप्रधानानि इन्द्रियाणि  
 प्रभावयेत् 2, 105, 21. इति प्रभावितं प्रभुणा Verz. d. Oxf. H. 238, b, 5. —  
 Vgl. *प्रभावन्* (bedeutet als *caus.* von भू mit प्र *Schöpfer* oder *zum Ge-*  
*deihen führend*), *प्रभावना*, *प्रभावयितर* und streiche den Artikel *प्रभा-*  
*वय*. — *desid.* vom *caus.* *vergrössern* — d. h. *dehnen* oder *anschwellen*  
*wollen*: एतद्गन्धमभ्यायच्छक्येतद्वर्धयेत्प्रभवावयिषति AIT. Br. 5, 3.  
 — *अनुप्र sich verbreiten durch*: सूर्यो विश्वमनु प्रभूतः *Einschiebung*  
 nach VĀLAKH. 9. ÇAT. Br. 10, 6, 3, 2. जीविनात्मनानुप्रभूतः *durchdrungen*  
 — *erfüllt von* KHĀND. Up. 6, 11, 1.  
 — *अभिप्र Jmd (acc.) beistehen*: ज्ञानमिद्वैर्गर्तवमुरीज्ञानं भूमिर्भि प्र-  
 भूषणिं *dem Opferer mögen Himmel und Erde beistehen* RV. 10, 132, 1.  
 Die Formen auf *सनि* sind, wie es scheint, als Infinitive mit imperati-  
 ver Bedeutung zu betrachten, wie die Infinitive auf *अद्यै*. Man ver-  
 gleiche उपस्तृषाषणि, गृषाषणि, तृषाषणि, नेषणि, पर्षणि und berich-  
 tige demgemäss die angegebenen Bedeutungen.  
 — *उपप्र helfen*: उप मां देवाः प्राभूवन् ÇAT. Br. 12, 4, 3, 10. 4, 2.  
 — *प्रति Jmd (acc.) gleichkommen*: एषा विद्येतरं विद्ये प्रतिभविष्यति  
 ÇAT. Br. 4, 6, 3, 16. — Vgl. *प्रतिभू*. — *caus.* *beobachten, kennen lernen*:  
 ग्रामेयान्ग्रामदोषाश्च ग्रामिकः प्रतिभावयेत् । तान्ब्रूयाद्दशयायासौ स तु विं-  
 शतिपाय वै ॥ MBH. 12, 3264. कुलिशं सर्वलोक्तानामम्भसां शैलसेतवः । अ-  
 भेद्याः प्रतिभाव्यन्ते *werden gehalten für* Spr. 3952.  
 — *वि* 1) *entstehen, sich entfalten; erscheinen*: मृत्विना वि यद्गूः RV.  
 6, 15, 14. 2, 1, 15. *वि सुष्येपे पृथ्वे केवलो भूत् 4, 25, 7. तपसा विभूतम् 10,*  
*183, 1. विभवत्येष आत्मा* MUṆD. Up. 3, 1, 9. त्रेधा व्यंभवत् TS. 5, 2, 6, 2. —

2) *gleichkommen, erreichen, erfüllen; ausreichen, zureichen* (vgl. उद्): न च-  
 त्वारि षड्यो विभवति PAṆĀV. Br. 16, 3, 20. न सप्तधा व्यभवत् ÇAT. Br. 10,  
 4, 2, 8. fgg. 14, 4, 2, 23. fgg. एकं (एका) वा इदं वि बभूव सर्वम् *Einschiebung*  
 nach VĀLAKH. 9. इयं वा इदं सर्वं विभवत्येष्यति PAṆĀV. Br. 20, 14, 2. KĀTJ.  
 ÇR. 12, 1, 13. — 3) *vermögen zu* (infinit.) BHĀG. P. 5, 1, 12. — Vgl. *विभव,*  
*विभु, विभूति*. — *caus.* 1) *zur Entfaltung bringen* ÇĀNĀK. Br. 22, 6. — 2)  
*trennen, scheiden*: येन — अमी भावा रजःसहस्रमोमयाः । गुणानामक्रियाद्वयै-  
 र्विभाव्यन्ते BHĀG. P. 6, 1, 41. — 3) *erscheinen lassen, offenbaren, zeigen*:  
 तेजसा तेन ज्योतीषि विभाव्य (= अग्निभाव्य Schol.) HARIV. 12048. कथं  
 पर्यति (सूर्यः) वसुधां भुवनानि विभावयन् (= प्रकाशयन् Schol.) SŪRJAS. 12,  
 3. यशः परं जगति विभाव्य (= प्रकाश्य Schol.) MBH. 7, 66. *विभावयितु-*  
*मृद्धीनां फलं मुह्यदनुग्रहम्* Spr. 3784. *स्वाज्ञानं विभावयन्तः* so v. a. *thwend,*  
*als wenn sie es nicht wüssten*. KULL. zu M. 8, 362. — 4) *wahrnehmen*  
 RAGH. 11, 10. VIKR. 31, 6. 132. Spr. 833. 1133. 1461. 1842. 2368. KĀM.  
 NITIS. 11, 66. 17, 12. VARĀH. BRH. S. 38, 1. MĀRK. P. 23, 45. RĀĠĀ-TAR. 3,  
 17. ÇĀNĀK. zu BRH. ĀR. Up. S. 216. ÇIÇ. 9, 81. BHĀG. P. 1, 15, 37. PAṆĀKAT.  
 188, 1. *ausfindig machen, entdecken, erkennen*: प्रकृतीनां च राज्ञे राज्ञा  
 दीनान्विभावयेत् (= पूजयेत् Schol.) MBH. 13, 226. वाक्ष्यैर्विभावयेत्सिद्धै-  
 र्भावमत्तर्गतं नृणाम् M. 8, 25. 10, 57. R. 6, 99, 39. SUÇR. 1, 236, 21. तव सु-  
 चरितम् — नूनं प्रतनु ममेव विभाव्यते फलेन ÇĀK. 138. VIKR. 54, 12. Spr.  
 610. 3386. KATHĀS. 30, 82. इष्टगन्धानि देवानां पुण्याणीति विभावय  
*erkenne, wisse, dass* MBH. 13, 1703. SUÇR. 2, 348, 9. यः सत्यः स विभाव्यते  
*der wird anerkannt* VARĀH. BRH. S. 2, 49. KIR. 2, 23. *sich denken, sich*  
*vorstellen, dem Geiste vorführen* BUĀG. P. 3, 9, 11. Verz. d. Oxf. H. 268,  
 a, 8. PAṆĀK. 1, 3, 70. *Etwas (acc.) bei Jmd (loc.) annehmen, vorausset-*  
*zen* BUĀG. P. 9, 8, 12. *überlegen, nachdenken* KATHĀS. 39, 12. PAṆĀKAT. 210,  
 10. ed. orn. 37, 5. *pass.* *erscheinen, angesehen werden für*: यथा सूर्यप्र-  
 भिः स्पष्टं सर्वं शुचि विभाव्यते MBH. 1, 932. 13, 1012 (= 14, 1086). HARIV.  
 2183. R. 4, 10, 27. 6, 4, 58. RĀĠĀ-TAR. 3, 98. PRAB. 79, 12. PAṆĀKAT. 43, 13.  
 — 5) *Etwas beweisen, nachweisen, erweisen* M. 8, 47. 51. 56. JĀĠĀ. 2, 33.  
 171. KULL. zu M. 8, 225. — 6) *Jmd überführen* JĀĠĀ. 2, 20. *überzeugen*  
 DAÇAK. in BENF. Chr. 192, 14. — Vgl. *विभावक* u. s. w. — *intens.* *sich*  
*verbreiten*: ऐन्द्रो ऽपानो अङ्ग्रे अङ्ग्रे वि बभूवत् ÇAT. Br. 7, 3, 1, 40.  
 — *अनुवि gleichkommen, ausreichen, ausfüllen* ÇAT. Br. 7, 3, 1, 40. हे  
 यजुषी त्रान्परिधीननुविभवतः 9, 4, 4, 13. एका सती सर्वमग्निनुविभवति  
 10, 5, 2, 15.  
 — *सम्* 1) *zusammenkommen, sich verbinden*: पृक्त्वनं सृह सं भवम AV.  
 6, 119, 2. 12, 3, 10. सं तं मज्ञा मज्ञा भवतु 4, 12, 3. मृताः पितृषु सं भवतु  
 18, 4, 48. 6, 74, 3. 12, 1, 3. सं ज्योतिषाभूमं ÇĀNĀK. ÇR. 4, 12, 9. या प्राणो  
 संभवत्यदितिः KATHOP. 4, 7. प्राणो या (सरस्वती) संभवते MBH. 14, 653.  
 In der späteren Sprache in dieser Bed. überaus häufig संभूय absol.:  
 संभूयाम्भोनिधिभयेति महानद्या नगापगा Spr. 1983. संभूय पौरवृद्धेः DA-  
 ÇAK. in BENF. Chr. 201, 6. संभूय च समुत्थानम् M. 8, 4. 211. JĀĠĀ. 2, 249.  
 SUND. 2, 11. MBH. 1, 5658. 4, 999. 12, 2822. KĀM. NITIS. 11, 2. KATHĀS.  
 10, 60. 42, 105. RĀĠĀ-TAR. 1, 326. 5, 258. 6, 220. HIT. 107, 19. TRIK. 3,  
 2, 5. संभूयगमनम् KĀM. NITIS. 11, 6. संभूयानम् 7. शत्रुशेषमृषाच्छेषं शेष-  
 मग्रेष्ठ भूमिप । संभूय पुनर्वर्धत Spr. 2945. मरुदादिभिः संभूतम् *zusammen-*  
*gefügt aus* BUĀG. P. 1, 3, 1. यथा पञ्चसु भूतेषु संभूतत्वं निवचकृति (निगच्छति